4. मात्रा ज्ञान

मात्राओं का उचित ज्ञान भाषा लेखन तथा उच्चारण की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। प्रारंभिक स्तर से ही यदि बच्चे मात्राओं का सही उच्चारण और लेखन भली-भाँति सीख जाते हैं तो भाषा पर उनकी पकड़ मज़बूत बनती जाती है।

- ❖ शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को बताएँ कि मात्राएँ स्वर वर्णों की होती हैं, जिन्हें व्यंजन वर्णों पर लगाया जाता है।
- ❖ बताएँ, 'अ' स्वर सभी व्यंजनों के साथ शामिल रहता है पर उसकी कोई मात्रा नहीं होती। 'अ' के बिना सभी व्यंजन आधे होते हैं, जैसे-क् (क), ख् (ख) आदि। बाकी सभी स्वर अपने मात्रा रूप में व्यंजनों के साथ जुड़ते हैं।
- ❖ एक-एक कर सभी मात्राओं से बच्चों को परिचित करवाएँ। प्रत्येक मात्रा की बनावट बनवाएँ तथा उन्हें वर्णों पर लगाकर वर्ण का मात्रा युक्त उच्चारण पहले स्वयं करें तदुपरांत बच्चों से करवाएँ।
- ❖ सबसे पहले बताएँ कि 'आ' की मात्रा वर्ण के पीछे एक सीधी रेखा **'ा'** के रूप में लगाई जाती है। आ की मात्रा के शब्दों का उच्चारण करवाएँ तथा पुस्तक पृष्ठ पर दिए चित्रों की पहचान करवाकर शब्द पूरे करवाएँ।
- ❖ **'इ-ई ि ी'** की मात्रा समझाने के लिए बताएँ कि इ की मात्रा 'ि' वर्णों के आगे तथा ई की मात्रा 'ी' वर्णों के पीछे लगाई जाती है। इ-ई की मात्रा वाले शब्दों का उच्चारण करवाते हुए पृष्ठ पर दिए उचित स्थान पर अभ्यास करवाएँ। बच्चों को इ-ई की मात्रा युक्त शब्दों के उच्चारण का भेद स्पष्ट करते हुए दोनों मात्राओं वाले एक-एक शब्द पहले स्वयं बोलें तदुपरांत बच्चों से बुलवाएँ। दोनों मात्राओं के उच्चारण में लघु तथा दीर्घ ध्वनि के अंतर को समझाएँ।
- ❖ प्रत्येक बच्चे पर ध्यान दें कि वह यह मात्रा का अंतर भली-भाँति समझ पा रहा है या नहीं।
- ❖ इसी प्रकार बताएँ, **उ-ऊ** की मात्राएँ ु ू' वर्णों के नीचे लगाई जाती हैं। फिर पृष्ठ पर दिए चित्रों की पहचान करवाएँ और उनका नाम उच्चारण करवाते हुए मात्रा अभ्यास करवाएँ। लघु और दीर्घ मात्रा ध्वनि के द्वारा उ-ऊ का मात्रा अंतर करवाएँ।
- ❖ **र** में उ-ऊ की मात्रा अन्य वर्णों की तरह नीचे न लगकर र के पेट में या वर्ण के बीच में लगाई जाती है, इसका भी अभ्यास करवाएँ। जैसे - रु, रू।
- ❖ इसी प्रकार अन्य मात्राएँ ऋ, ए-ऐ, ओ-औ तथा अनुस्वार (ं) और चंद्रबिंदु (ँ) मात्राओं की बनावट, वर्णों पर कहाँ लगाते हैं तथा मात्रायुक्त शब्दों का उच्चारण करवाएँ।
- ❖ बीच-बीच में बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए आस-पास की वस्तुओं या रोज़मर्रा के जीवन से जुड़ी वस्तुओं के नामों का उच्चारण करवाते हुए मात्राओं के बारे में बच्चों से जान सकते हैं।
- ❖ अभ्यास करवाने में बच्चों की यथोचित सहायता करें।